



जुलाई: 2025

वर्ष : 8 अंक : 10

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर



निदेशक की कलम से

संस्थान का जुलाई मास का मासिक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस अंक में जून, 2025 में हुई संस्थान की गतिविधियों को दिखाया गया है।



हमें आपको यह बताते हुए खुशी हो रही है कि संस्थान अपने विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. हीरालाल चौधरी द्वारा प्रेरित प्रजनन की ऐतिहासिक उपलब्धि के उपलक्ष्य में 10 जुलाई 2025 को “राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस-2025” का आयोजन कर रहा है। इस अवसर पर, भारत के विभिन्न राज्यों के प्रगतिशील मत्स्य कृषकों को उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए ‘सर्वश्रेष्ठ मत्स्य कृषक पुरस्कार-2025’ से सम्मानित किया जाएगा। साथ ही, एक वैज्ञानिक-मछली कृषक संवादात्मक सत्र आयोजित किया जा रहा है जिसमें मछुआरों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार और उनके समस्याओं के निदान जैसे प्रमुख पहलुओं को संबोधित किया जाएगा। इस कार्यक्रम में मछुआरों, उद्यमियों, सजावटी मछली उत्पादकों, उद्योग प्रतिनिधियों और किसान उत्पादक कंपनियों (एफपीसी) सहित हितधारक भी भाग लेंगे।

जून 2025 महीने में संस्थान के प्रमुख गतिविधियों में केंद्र सरकार का 15-दिवसीय 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' (29 मई से 12 जून 2025) प्रमुख है जिसका उद्देश्य देश भर में आधुनिक, टिकाऊ और लाभकारी कृषि पद्धतियों को किसानों द्वारा अपनाने और उनमें प्रचलित करने को बढ़ावा देना है। यह पहल 'विकसित भारत@2047' जैसे व्यापक राष्ट्रीय लक्ष्यों को ध्यान में रख कर किया गया है, जो भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने की संकल्पना को साकार कर सकता है।

इस अभियान के अंतर्गत, सिफरी ने पश्चिम बंगाल के 11 जिलों — दक्षिण 24 परगना, बीरभूम, मुर्शिदाबाद, हुगली, नदिया, बर्दवान, उत्तर दिनाजपुर, जलपाईगुड़ी, अलीपुरद्वार, कलिम्पोंग और दार्जिलिंग — के कृषि विज्ञान केंद्रों (KVKs) के सहयोग से लगभग 290 गांवों में 78,076 किसानों (46,398 पुरुष और 31,678 महिलाएं) तक पहुंच पाए। संस्थान ने इस अभियान का शुभारंभ 29 मई, 2025 को पश्चिम बंगाल के नदिया जिले में स्थित कुमली आर्द्र झील क्षेत्र से किया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने स्वयं मछुआरों से प्रत्यक्ष संवाद किया और उनकी समस्याओं को सुना। इन प्रयासों से संस्थान के वैज्ञानिकों को किसानों की स्थिति और उनकी समस्याओं आदि में भावी अनुसंधान की दिशा तय करने के साथ मछली उत्पादन बढ़ाने, संभावित खतरों को कम करने और सतत मत्स्य पालन में अधिक आसानी होगी।

शुभकामनाओं सहित,

बि. के. दास

(बसन्त कुमार दास)

तीस्ता नदी, सिक्किम की स्थानिक मछली प्रजातियों के संरक्षण पर क्षेत्र दिवस-सह-जागरूकता कार्यक्रम



आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, और संस्थान क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी, मत्स्य पालन विभाग (डीओएफ), सरकार के सहयोग से सिक्किम सरकार ने 23-25 मई 2025 के दौरान गंगटोक, पाकयोंग और नामची जिलों, सिक्किम में तीस्ता नदी और उसकी सहायक नदियों में 'तीस्ता नदी, सिक्किम की स्थानिक मछली प्रजातियों के संरक्षण' पर तीन जागरूकता क्षेत्र दिवस आयोजित किए। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर; सुश्री रोशनी राय, सचिव, डीओएफ, सिक्किम; श्री के.के. श्रेष्ठ, निदेशक, डीओएफ, सिक्किम, और डॉ. एस.के. माझी, प्रमुख, आईसीएआर-सीआईएफआरआई, गुवाहाटी। कार्यक्रम में आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर; आईसीएआर-सीआईएफआरआई, गुवाहाटी के वैज्ञानिकों और कर्मचारियों; सिक्किम के तीनों जिलों के सहायक निदेशकों और डीओएफ अधिकारियों; और एसआरएम विश्वविद्यालय, सिक्किम के छात्रों सहित 50 मछुआरों ने भाग लिया। तीन दिवसीय कार्यक्रम के दौरान, आईसीएआर-सीआईएफआरआई क्षेत्रीय केंद्र की वैज्ञानिक डॉ. नीति शर्मा ने सिक्किम की तीस्ता नदी में स्थानिक मछली प्रजातियों की स्थिति और महत्व पर प्रस्तुति दी। आईसीएआर-सीआईएफआरआई, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एस.सी.एस. दास ने प्रतिबंधित मौसम और आवास की पारिस्थितिकी के महत्व पर जोर दिया। बैरकपुर में आईसीएआर-सीआईएफआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. दिवाकर भक्ता ने स्थानिक मछली प्रजातियों के संरक्षण की स्थिति और आवश्यक उपायों के बारे में बताया, जिसमें परिपक्व और किशोर मछलियों को नदी प्रणाली में वापस छोड़ना शामिल है। सिक्किम सरकार के मत्स्य विभाग के सहायक निदेशक श्री नरेश सुनार ने अपनी टीम के साथ मछुआरों से प्रतिबंधित मौसम के दौरान मछली पकड़ने से परहेज करने और दूसरों को इस मौसम और मछली संरक्षण के महत्व के बारे में बताने का आग्रह किया।

इस पहल का उद्देश्य स्थानीय समुदायों, मछुआरों और छात्रों के बीच तीस्ता नदी में रहने वाली विभिन्न मछली प्रजातियों और इसकी स्थानिक प्रजातियों के संरक्षण की तत्काल आवश्यकता के बारे में जागरूकता बढ़ाना था, जिनमें से कई को आवास क्षरण, अनियमित



मछली पकड़ने और जलवायु परिवर्तन से खतरा है। कार्यक्रम में क्षेत्र प्रदर्शन, इंटरैक्टिव सत्र और स्थानीय भाषाओं में जागरूकता सामग्री का वितरण शामिल था। कार्यक्रम ने चल रही पारिस्थितिकी और आजीविका सुरक्षा के लिए जलीय जैव विविधता को बनाए रखने के सामाजिक-आर्थिक लाभों पर भी प्रकाश डाला। इस पहल को प्रतिभागियों से अनुकूल प्रतिक्रिया मिली और उम्मीद है कि यह सिक्किम की अनूठी नदी जैव विविधता की रक्षा के लिए निरंतर सहयोगी प्रयासों को प्रोत्साहित करेगी।



सीआईएफआरआई ने शुरू किया: विकसित कृषि संकल्प अभियान



देश के कोने-कोने में फैले 700 जिलों के लगभग 1.5 करोड़ किसानों तक सीधे पहुंचने के उद्देश्य से, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) और कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों के सहयोग से राष्ट्रव्यापी अभियान “विकसित कृषि संकल्प अभियान” शुरू किया गया है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य वैज्ञानिकों और किसानों के बीच पारस्परिक सीखने में तेजी लाकर भूमि-प्रयोगशाला-सीखने के बीच के अंतर को कम करना है। यह कार्यक्रम 29 मई से 12 जून, 2025 तक 15 दिनों तक जारी रहेगा, जिसमें वैज्ञानिकों के 2000 से अधिक समूह सीधे अपने गांवों में कृषक समुदाय तक पहुंचेंगे और नई कृषि प्रौद्योगिकियों और सरकारी योजनाओं के बारे में चर्चा करेंगे और साथ ही नवीनतम और बेहतर प्रौद्योगिकियों के बारे में किसानों की प्रतिक्रिया का दस्तावेजीकरण करेंगे।

आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय
मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
(सीआईएफआरआई) इस विशाल
अभियान में प्रमुख भागीदारों में से एक
है और तदनुसार, सीआईएफआरआई ने
भी 29 मई, 2025 को पश्चिम बंगाल
के नदिया जिले में स्थित कुमली की
वेटलैंड से “विकसित कृषि संकल्प
अभियान” के तहत अपनी यात्रा शुरू
की है। सीआईएफआरआई के निदेशक
डॉ बी के दास वेटलैंड पहुंचे और 50%





से अधिक महिलाओं सहित 202 स्थानीय मछली किसानों के साथ निकटता से बातचीत की। शुरुआत में, डॉ दास ने प्रतिभागियों को मत्स्य पालन के साथ-साथ कृषि के वर्तमान परिदृश्य पर अपने विचार खुलकर व्यक्त करने और उनके सामने आने वाली समस्याओं के बारे में चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित किया। पहचान की गई प्रमुख समस्याएं थीं वेटलैंड में पानी की कमी के दौरान

वेटलैंड में पानी पंप करने के लिए ढांचागत सुविधाओं की कमी, पकड़ी गई मछलियों के लिए उचित लैंडिंग केंद्र की अनुपस्थिति इसके अलावा, किसानों ने यह भी बताया कि उन्हें मत्स्य पालन से संबंधित विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं है। इन मुद्दों को देखते हुए, डॉ. आर.के. मन्ना, एचओडी, आरईएफ डिवीजन ने उनकी समस्याओं के संभावित समाधानों के साथ-साथ वेटलैंड मत्स्य पालन प्रबंधन के लिए उपयुक्त विभिन्न आधुनिक मत्स्य पालन तकनीकों जैसे पेन कल्चर तकनीक और कल्चर आधारित मत्स्य पालन के बारे में चर्चा की। इसके अलावा, डॉ. अपर्णा रॉय, प्रभारी ई एंड टी सेल ने किसानों को मत्स्य पालन और कृषि से संबंधित विभिन्न सरकारी योजनाओं और सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। इसके अलावा, कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागियों के बीच वेटलैंड मत्स्य प्रबंधन पर पर्चे, पीएमएमएसवाई योजना पर पत्रक और खरीफ पूर्व फसल सलाह पर पत्रक वितरित किए गए। सीआईएफआरआई ने पश्चिम बंगाल के कई जिलों जैसे बीरभूम, पूर्वी बर्दवान, उत्तर दिनाजपुर, मुर्शिदाबाद, दक्षिण 24 परगना, हुगली, दार्जिलिंग, झारग्राम और पश्चिम मेदिनीपुर, हुगली में “विकसित कृषि संकल्प अभियान” के पहले दिन भाग लिया, जहाँ सीआईएफआरआई के वैज्ञानिकों ने संबंधित जिले के केवीके के एसएमएस और अन्य आईसीएआर संस्थानों के वैज्ञानिकों के साथ मिलकर किसानों से बातचीत की और समकालीन कृषि, पशुधन और मछली पालन के मुद्दों पर चर्चा की और उनकी समस्याओं का जमीनी समाधान देने की कोशिश की। प्री-खरीफ अभियान के पहले ही दिन आईसीएआर-सिफरी 5,722 से अधिक किसानों तक पहुँच चुका है।



नागालैंड के स्कूलों में सीआईएफआरआई कॉर्नर

आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (सीआईएफआरआई), कोलकाता ने मत्स्य पालन और जलीय संसाधन विभाग (डीओएफएंडएआर), नागालैंड सरकार के सहयोग से नागालैंड के स्कूलों में एक्वेरियम मछली रखने को लोकप्रिय बनाने के



लिए 29 मई, 2025 को एक “जागरूकता-सह-इनपुट वितरण कार्यक्रम” का आयोजन किया। कार्यक्रम का आयोजन आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर के निदेशक डॉ. बि. के. दास; नागालैंड सरकार के मत्स्य पालन और जलीय संसाधन निदेशक श्री रोंगसेनगबा और आईसीएआर-सीआईएफआरआई क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के प्रमुख डॉ. एस. के. माझी के समग्र मार्गदर्शन में किया गया। इस कार्यक्रम का समन्वय वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनिल कुमार यादव और वैज्ञानिक डॉ. सिमंकू बोरा ने किया, जिसमें श्री इम्तिसुनेप, जिला मत्स्य अधिकारी, दीमापुर, नागालैंड का भरपूर सहयोग रहा। कार्यक्रम में स्कूल के शिक्षकों, वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों, मत्स्य अधिकारियों और मीडिया प्रतिनिधियों सहित 80 उपस्थित लोगों ने भाग लिया।

समारोह का स्वागत करते हुए, डॉ. विमेज़ो कीरे, उप निदेशक, डीओएफएंडएआर, नागालैंड ने कार्यक्रम के उद्देश्यों का परिचय दिया और प्रतिभागियों को आईसीएआर-सीआईएफआरआई और अन्तर्स्थलीय मत्स्य विकास में इसकी भूमिका के बारे में जानकारी दी। उद्घाटन भाषण में, डॉ. सिमंकू बोरा ने पूरे उत्तर पूर्वी क्षेत्र में संस्थान की शोध और विस्तार गतिविधियों पर विस्तार से बताया। उन्होंने स्कूल के प्रतिनिधियों को छात्रों





को एक्वेरियम मछली रखने के पर्यावरणीय और मनोवैज्ञानिक लाभों के बारे में शिक्षित करने के लिए प्रोत्साहित किया और कोमल दिमागों में मत्स्य पालन में रुचि पैदा करने की आवश्यकता पर जोर दिया। डॉ. अनिल कुमार यादव ने अपने संबोधन में रोजगार और आय पैदा करने और भविष्य के रूप में मत्स्य पालन क्षेत्र की क्षमता पर प्रकाश डाला।

मुख्य अतिथि श्री लोटिमेंबा, अतिरिक्त निदेशक, डीओएफएंडएआर ने राज्य के मत्स्य क्षेत्र को विकसित करने के लिए इस तरह के कार्यक्रम के आयोजन के लिए आईसीएआर-सीआईएफआरआई की पहल और विभाग के समर्थन को स्वीकार किया उन्होंने सजावटी मत्स्य पालन और संबंधित आजीविका के अवसरों को मजबूत करने के लिए राज्य सरकार से पूर्ण समर्थन का आश्वासन दिया। स्कूल प्रतिनिधियों ने भी इस पहल के लिए आभार व्यक्त किया, कहा कि यह छात्रों को प्रेरित करेगा और एक्वेरियम के उचित रखरखाव का आश्वासन दिया। तकनीकी सत्र में डॉ. सिमंकू बोराह, डॉ. अनिल कुमार यादव, डॉ. विमेजो कीर और श्री इम्तिसुनेप द्वारा विशेषज्ञ वार्ता शामिल थी, जिन्होंने एक्वेरियम मछली रखने के विभिन्न पहलुओं को समझाया, जिसमें स्थापना और रखरखाव शामिल है। एम.आर. एक्वाटेक, भुवनेश्वर के एक्वा तकनीशियनों द्वारा एक्वेरियम सेटअप पर एक व्यावहारिक प्रदर्शन भी प्रदान किया गया। 'एक्वेरियम में सजावटी मछली पालन और इसके रखरखाव' पर एक अनुकूलित निर्देश सामग्री जारी की गई और प्रतिभागियों के बीच साझा की गई। इसके बाद एक इंटरैक्टिव सत्र हुआ, जहाँ वैज्ञानिकों और मत्स्य विशेषज्ञों ने प्रतिभागियों के



प्रश्नों का उत्तर दिया, जिसमें शिक्षा और संरक्षण में एक्वेरियम मछली रखने की भूमिका पर जोर दिया गया। कार्यक्रम का समापन 50 स्कूलों को सहायक उपकरण और सजावटी मछलियों के साथ 50 एक्वेरियम के वितरण के साथ हुआ।

संस्थान द्वारा 22 से 28 मई 2025 तक सिक्किम की तीस्ता और रंगीत नदियों में नदी नमूनाकरण



आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर ने सिक्किम सरकार के मत्स्य विभाग के सहयोग से 22 मई से 28 मई, 2025 तक गंगटोक, पाकयोंग और नामची जिलों में नदी नमूनाकरण कार्यक्रम आयोजित किया। नमूनाकरण तीस्ता और रंगीत नदियों के पारिस्थितिक रूप से महत्वपूर्ण खंडों में हुआ, जिसका उद्देश्य मछली विविधता, जल गुणवत्ता और इन नदी पारिस्थितिकी प्रणालियों के समग्र स्वास्थ्य का मूल्यांकन करना था। सर्वेक्षण आईसीएआर-सीआईएफआरआई के निदेशक डॉ. बि. के. दास के निर्देशन में सिक्किम सरकार के मत्स्य विभाग के सचिव के साथ-साथ विभागीय अधिकारियों और फील्ड स्टाफ के सहयोग से किया गया था।

नमूनाकरण तीस्ता और रंगीत नदियों पर केंद्रित था, जो राज्य की महत्वपूर्ण नदी प्रणालियाँ हैं। मछली की जैव विविधता, जल गुणवत्ता की निगरानी और आवास के मूल्यांकन के लिए गंगटोक, पाकयोंग और नामची जिलों में तीस्ता और रंगीत नदियों के कुल 10 चयनित हिस्सों का सर्वेक्षण किया गया। गिल जाल और हुक-एंड-लाइन विधियों का उपयोग करके प्रयोगात्मक मछली पकड़ने

का काम किया गया। पोर्टेबल परीक्षण किटों के साथ पानी की गुणवत्ता का आकलन किया गया और नमूना स्थानों को जियो-टैग किया गया। सिक्किम में वर्तमान में मछलियों को उनके प्रजनन काल के दौरान सुरक्षित रखने के लिए मौसमी मछली पकड़ने पर प्रतिबंध है। हालांकि, मत्स्य विभाग ने इस आवश्यक पारिस्थितिक मूल्यांकन में सहायता के लिए वैज्ञानिक उद्देश्यों के लिए प्रयोगात्मक मछली पकड़ने को अधिकृत और सुविधाजनक बनाया है। सप्ताह भर चलने वाले सर्वेक्षण अवधि के दौरान, नियोलिसोचिलस हेक्सागोनोलेपिस, स्किज़ोथोरैक्स एसपी, गर्ग एसपी, ग्लिष्टोथोरैक्स एसपी और टोर पुटिटोरा सहित स्वदेशी मछली प्रजातियों प्रारंभिक अवलोकनों से संकेत





मिलता है कि अपस्ट्रीम क्षेत्रों में पानी की गुणवत्ता जलीय जीवन के लिए उपयुक्त है। शहरी दबाव और गाद के परिणामस्वरूप डाउनस्ट्रीम क्षेत्रों में आवास तनाव देखा गया। स्थानीय मछुआरों ने मछली पकड़ने में कमी का संकेत दिया है, जो स्थायी प्रबंधन और पुनः भंडारण पहल की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

यह पहल पहाड़ी क्षेत्रों में नदी प्रणालियों की वैज्ञानिक निगरानी के महत्व को उजागर करती है और सिक्किम में स्थायी अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन की वकालत करती है। आईसीएआर-सीआईएफआरआई और मत्स्य विभाग, सिक्किम के बीच सहयोग राज्य के महत्वपूर्ण जलीय संसाधनों की पारिस्थितिक अखंडता को बनाए रखने के लिए आपसी समर्पण को दर्शाता है। चल रहे आईसीएआर-सीआईएफआरआई संस्थागत परियोजना के हिस्से के रूप में डॉ. नीति शर्मा, वैज्ञानिक; डॉ. एस.सी.एस. दास, वरिष्ठ वैज्ञानिक; डॉ. दिवाकर भक्त, वरिष्ठ वैज्ञानिक; और श्री बिपुल दास, तकनीकी अधिकारी द्वारा क्षेत्र सर्वेक्षण किया गया था। नमूना कार्यक्रम के दौरान टीम ने सिक्किम के मत्स्य विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों से महत्वपूर्ण सहयोग और रसद सहायता प्राप्त की। इसके बाद एक संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया, जिसमें वैज्ञानिकों और मत्स्य विशेषज्ञों ने प्रतिभागियों के प्रश्नों का उत्तर दिया, तथा शिक्षा और संरक्षण में एक्वेरियम मछली पालन की भूमिका पर जोर दिया। कार्यक्रम का समापन दीमापुर, चौमौकेदिमा और निउलैंड जिलों के 50 स्कूलों में 50 एक्वेरियम के साथ सहायक उपकरण और सजावटी मछलियाँ वितरित करने के साथ हुआ।



उन्नत कृषि संकल्प अभियान ने दार्जिलिंग के टाकलिंग में किसानों को सशक्त बनाया

रोंगली-रोंगलोइट ब्लॉक के आठ गांवों के 200 से अधिक किसान और छात्र उन्नत कृषि संकल्प अभियान में भाग लेने के लिए



टाकलिंग I में एकत्र हुए, जो एक राष्ट्रीय अभियान है जिसका उद्देश्य टिकाऊ कृषि, वैज्ञानिक जागरूकता और किसान-केंद्रित नीतियों के माध्यम से ग्रामीण समुदायों को सशक्त बनाना है।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई द्वारा टाकलिंग I ग्राम पंचायत और सिटोंग मल्टी एग्रो-हॉर्टिकल्चर प्रोसेसिंग आरईएच सोसाइटी के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में क्षेत्र-विशिष्ट कृषि तकनीक, जल-बचत फसल प्रणाली, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन और पहाड़ी मत्स्य पालन विकास सहित कृषि के महत्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा की गई।





कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण पहाड़ी मत्स्य पालन, जैविक खेती और बागवानी पर सत्र था, जिसमें सुंदरबन के नाजुक लेकिन गतिशील पारिस्थितिकी तंत्र के लिए उपयुक्त नवीन प्रथाओं पर जोर दिया गया। इस कार्यक्रम में संवादात्मक सत्र भी शामिल थे, जिससे किसान और मछुआरे स्वदेशी ज्ञान साझा कर सकें, स्थानीय चुनौतियों पर चर्चा कर सकें और वैज्ञानिकों और कृषि विशेषज्ञों से सीधे जुड़ सकें। इस कार्यक्रम में आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर के निदेशक डॉ. बि. के. दास, टाकलिंग I ग्राम पंचायत की प्रधान सुश्री चांदनी तमांग, रामा आंचल सोसाइटी के अध्यक्ष श्री विक्रम प्रधान और वर्नज्योति एजुकेयर के संस्थापक और निदेशक श्री संदीप कुमार दास जैसे प्रतिष्ठित अतिथि शामिल हुए। उनकी अंतर्दृष्टि ने उपस्थित किसानों को बहुमूल्य तकनीकी मार्गदर्शन और प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम का समापन सभी प्रतिभागियों द्वारा टिकाऊ और जैविक खेती के तरीकों को अपनाने की सामूहिक शपथ के साथ हुआ, जिसमें पारिस्थितिक संरक्षण और समुदाय-संचालित विकास के प्रति उनकी प्रतिबद्धता की पुष्टि की गई। यह कार्यक्रम भारत के सबसे पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में से एक में आत्मनिर्भर, जलवायु-लचीले आजीविका को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। विकसित कृषि संकल्प अभियान ज्ञान-साझाकरण, नवाचार और स्थिरता के माध्यम से कृषि समुदायों को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) की चल रही राष्ट्रव्यापी आउटरीच पहल “विकसित कृषि संकल्प अभियान (वीकेएसए)” का उद्देश्य वैज्ञानिक प्रगति को सीधे किसानों से जोड़कर कृषि अनुसंधान और जमीनी स्तर की प्रथाओं के बीच की खाई को पाटना है, जिससे ‘2047 तक विकसित भारत’ के सपने को साकार करने में योगदान मिल सके। राष्ट्रव्यापी अभियान को संबंधित राज्यों के कृषि, बागवानी, पशुपालन और मत्स्य पालन विभागों के सहयोग से कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके), आईसीएआर संस्थानों, क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्रों और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के सामूहिक प्रयासों के माध्यम से कार्यान्वित किया जा रहा है।



चिल्का झील की मत्स्य संपदा की स्थिरता सुनिश्चित करने हेतु विशेषज्ञ एकजुट भारत की पहली अन्तर्स्थलीय मत्स्य संपदा को MSC प्रमाणन हेतु चिन्हित किया गया



चिल्का झील की मिट्टी के केकड़ा (मड क्रैब) मत्स्य संपदा को वैश्विक मान्यता दिलाने हेतु एक संयुक्त पहल की गई है, जिसमें मत्स्य वैज्ञानिक, नीति-निर्माता, उद्योग जगत के प्रतिनिधि एवं समुदाय प्रमुख शामिल हुए। यह पहल झील की आर्थिक और पारिस्थितिक दृष्टि से महत्वपूर्ण मड क्रैब मत्स्य संपदा को *मैरीन स्टीवर्डशिप काउंसिल (MSC)* की स्थिरता प्रमाणन प्रक्रिया में शामिल करने के उद्देश्य से की गई है।

यह भारत की पहली अन्तर्स्थलीय मत्स्य संपदा है जिसे MSC प्रमाणन के लिए चिन्हित किया गया है। यह प्रमाणन न केवल संसाधन की रक्षा करेगा, बल्कि इसके निर्यात मूल्य को भी बढ़ाएगा और इस पर आश्रित समुदायों की आजीविका को सशक्त बनाएगा।

इस संयुक्त प्रयास में ICAR-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (CIFRI), चिल्का विकास प्राधिकरण (CDA) तथा सतत समुद्री खाद्य नेटवर्क इंडिया (SSNI) प्रमुख भागीदार हैं। बैरकपुर स्थित ICAR-CIFRI में आयोजित हितधारक कार्यशाला में सहयोग के प्रमुख क्षेत्रों, अनुसंधान प्राथमिकताओं और आवश्यक पूर्वशर्तों पर चर्चा की गई।





कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. बसंत कुमार दास, निदेशक, CIFRI ने कहा:

“सतत मत्स्य प्रबंधन चिल्का झील के पारिस्थितिक संतुलन की रक्षा और समुदायों की आजीविका सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह पहल संरक्षण और आर्थिक विकास को साथ लेकर चलने का प्रयास है।”

SSNI के अध्यक्ष डॉ. सुनील मोहम्मद, पूर्व प्रधान वैज्ञानिक, ICAR-CMFRI ने कहा:

“MSC प्रमाणन से वैश्विक बाजारों में बेहतर पहुंच और उत्पाद के लिए प्रीमियम मूल्य मिलेगा। यह प्रक्रिया संसाधन की स्थिरता, पर्यावरणीय प्रभाव को न्यूनतम करने और प्रभावी प्रबंधन को सुनिश्चित करती है।”

कार्यशाला में प्रतिभागियों ने प्रमाणन प्रक्रिया हेतु एक *रोडमैप* तैयार करने, समुदाय की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने तथा पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान हेतु पुनर्स्थापन और शमन रणनीतियाँ विकसित करने पर सहमति जताई। भारत वर्तमान में वैश्विक मत्स्य निर्यात में 4% योगदान दे रहा है और यह प्रमाणन उसे अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में नई ऊँचाई तक पहुँचाने में सहायक होगा।



पुलिकट झील की देशी मछलियों के संरक्षण हेतु "फील्ड डे सह समुदाय जागरूकता कार्यक्रमों" का आयोजन

देश की महत्वपूर्ण तटीय लैगून, पुलिकट झील, की देशी मछली प्रजातियों के संरक्षण हेतु ICAR-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (CIFRI) द्वारा 12 से 17 जून, 2025 के बीच एक सप्ताहव्यापी फील्ड डे सह समुदाय जागरूकता कार्यक्रमों की श्रृंखला आयोजित



की गई।

क्षेत्र दिवसों और जागरूकता पहलों के माध्यम से मछुआरों, सहकारी समितियों और स्थानीय शासन संरचनाओं को शामिल करना अंतर्देशीय और तटीय मत्स्य संसाधनों के उत्तरदायी प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने झील में अपने सतत मत्स्य पालन और जैव विविधता संरक्षण प्रयासों के तहत 12-17 जून, 2025 के दौरान "पुलिकट झील की देशी मछली प्रजातियों के संरक्षण पर क्षेत्र दिवस-सह-सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रमों" की एक श्रृंखला का आयोजन किया। ये कार्यक्रम पुलिकट झील के मत्स्य पालन पर चल रही संस्थागत परियोजना के तहत, पुलिकट झील के आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु दोनों भागों में आयोजित किए गए।

250 से अधिक मछुआरों, सहकारी समितियों के प्रतिनिधियों, स्थानीय नेताओं और मत्स्य विभाग के अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक कार्यक्रमों में भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान स्थानीय मछुआरों, समुदाय के सदस्यों और हितधारकों को संरक्षण-अनुकूल मत्स्य पालन के माध्यम से पुलिकट



झील की अनूठी और देशी मछली प्रजातियों को बनाए रखने की आवश्यकता और उनकी भूमिका के बारे में शिक्षित किया गया। इन कार्यक्रमों में संवादात्मक चर्चाएँ, सतत मत्स्य पालन प्रदर्शन और आजीविका एवं पारिस्थितिकी तंत्र संतुलन में देशी मछली प्रजातियों के महत्व पर जानकारी शामिल थी।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. दिबाकर भक्त, डॉ. एस. के. दास, डॉ. कैसियल जॉनसन और श्री हंसराज कुमार द्वारा निदेशक डॉ. बी. के. दास के मार्गदर्शन और आरईएफ प्रभाग के प्रमुख डॉ. एस. के. मन्ना के करीबी पर्यवेक्षण में किया गया।

विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत पश्चिम बंगाल में सिफरीने 78,000 से अधिक किसानों से जोड़ा संपर्क



विकसित कृषि संकल्प अभियान, 29 मई, 2025 को शुरू किया गया एक समर्पित 15-दिवसीय अभियान है, जिसका उद्देश्य पूरे भारत में आधुनिक, टिकाऊ और लाभदायक कृषि पद्धतियों को अपनाने में तेज़ी लाना है। यह पहल विकसित भारत@2047 के व्यापक राष्ट्रीय दृष्टिकोण के अनुरूप है, जिसका उद्देश्य 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना है। खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने, रोज़गार सृजन और ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका है।





इस प्रमुख किसान जागरूकता एवं संपर्क अभियान के तहत, लगभग 2,000 टीमें—जिनमें कृषि वैज्ञानिक, अधिकारी और प्रगतिशील किसान शामिल हैं—नवीन कृषि तकनीकों को बढ़ावा देने के लिए प्रतिदिन भारत भर के गाँवों का दौरा करती हैं। इस पहल के तहत, आईसीएआर-



सीआईएफआरआई ने जिला-स्तरीय कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके) के सहयोग से किसानों तक पहुँचने में महत्वपूर्ण प्रगति की है। आईसीएआर-सीआईएफआरआई अभियान पश्चिम बंगाल के 13 जिलों के 78,076 किसानों (46,398 पुरुष और 31,678 महिलाएँ) तक पहुँच चुका है, जिनमें



दक्षिण 24 परगना, बीरभूम, मुर्शिदाबाद, हुगली, झारग्राम, पश्चिम मेदिनीपुर, नादिया, बर्दवान, उत्तर दिनाजपुर, जलपाईगुड़ी, अलीपुरद्वार, कलिम्पोंग और दार्जिलिंग के 290 गाँव शामिल हैं।

सीआईएफआरआई ने "विकसित कृषि संकल्प अभियान" के तहत 29 मई, 2025 को पश्चिम बंगाल के नादिया जिले में स्थित कुमली आर्द्रभूमि से अपनी यात्रा शुरू की। सीआईएफआरआई के निदेशक डॉ. बी. के. दास आर्द्रभूमि पहुँचे और 200 से अधिक मछुआरों से बातचीत की। किसानों को खरीफ-पूर्व सलाह प्रदान करने के लिए कृषि विज्ञान केंद्रों और प्रगतिशील किसानों के सक्रिय सहयोग से यह व्यापक अभियान चलाया गया। पश्चिम बंगाल में खरीफ-पूर्व मौसम (अप्रैल-जून) भूमि की तैयारी, बीज उपचार और फसल नियोजन के लिए एक महत्वपूर्ण अवधि होती है, जो खरीफ मौसम की सफलता को सीधे प्रभावित करती है। इन परामर्शों का उद्देश्य किसानों को उत्पादकता और





जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीलापन बढ़ाने के लिए समय पर और क्षेत्र-विशिष्ट प्रथाओं के बारे में मार्गदर्शन प्रदान करना है। पश्चिम बंगाल में मत्स्यपालकों के लिए खरीफ-पूर्व अवधि आगामी मानसून के मौसम के लिए जलीय कृषि प्रणाली तैयार करने के लिए भी महत्वपूर्ण है। यह परामर्श गाद हटाने, चूना डालने आदि के माध्यम से मछली

तालाब तैयार करने पर जोर देता है। स्टॉकिंग के लिए प्रमाणित हैचरी से गुणवत्ता वाले फिंगरलिंग का चयन, तालाब के आकार और प्रजातियों के आधार पर इष्टतम स्टॉकिंग घनत्व, जल गुणवत्ता प्रबंधन, संतुलित आहार, रोग निगरानी पर मत्स्य पालन से संबंधित परामर्श प्रदान किए गए। किसानों को स्थानीय भाषाओं में पत्रक भी वितरित किए गए। विभिन्न राज्य और केंद्र सरकार की योजनाओं पर चर्चा की गई। कई मत्स्यपालकों को राष्ट्रीय मत्स्य पालन डिजिटल प्लेटफॉर्म (NFDP) पर तत्काल पंजीकरण करने के लिए निर्देशित किया गया।

किसानों से उनकी मौजूदा प्रथाओं के बारे में प्रतिक्रिया ली गई। किसानों द्वारा किए गए कृषि नवाचारों का भी दस्तावेजीकरण किया गया। इससे आईसीएआर-सीआईएफआरआई के वैज्ञानिकों को आने वाले वर्षों में कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर आगे के शोध की योजना बनाने में मदद मिलेगी। यह व्यापक खरीफ-पूर्व तैयारी उत्पादकता बढ़ाने, जोखिम कम करने और राज्य भर में स्थायी जलीय कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देने में मदद करेगी।

CIFRI की यह जागरूकता यात्रा नादिया जिले के कुमली वेटलैंड से शुरू हुई, जहाँ निदेशक डॉ. बि. के. दास ने स्वयं 200 से अधिक मछुआरों से संवाद किया। अभियान के दौरान प्रगतिशील किसानों एवं कृषि विज्ञान केंद्रों (KVKs) के सहयोग से किसानों को पूर्व-खरीफ सलाहें प्रदान की गईं।

प्रमुख गतिविधियाँ और सलाह:

- भूमि तैयारी, बीज उपचार, एवं फसल योजना पर खरीफ पूर्व सलाह
- मछली पालन के लिए तालाब की सफाई, चुना डालना, जल गुणवत्ता प्रबंधन
- प्रमाणित हैचरी से उत्कृष्ट गुणवत्ता वाले फिंगरलिंग्स का चयन
- उपयुक्त स्टॉक घनत्व, संतुलित आहार, रोग निगरानी और प्रबंधन
- स्थानीय भाषा में पर्चे/पाम्फलेट का वितरण
- राष्ट्रीय मत्स्य डिजिटल मंच (NFDP) पर किसानों का ऑन-स्पॉट पंजीकरण
- राज्य व केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं की जानकारी

इस अभियान में साउथ 24 परगना, बीरभूम, मुर्शिदाबाद, हुगली, झाड़ग्राम, पश्चिम मेदिनीपुर, नदिया, बर्दवान, उत्तर दिनाजपुर, जलपाईगुड़ी, अलीपुरद्वार, कालिम्पोंग और दार्जिलिंग जिलों के 290 गाँवों को शामिल किया गया।

असम के ब्रह्मपुत्र नदी से साइप्रिनिड मछली की एक नई प्रजाति की खोज



Stud. Acad. Sci. Lett.
https://doi.org/10.18054/24009-025-00000-0

SHORT COMMUNICATION

A New Species of the Genus *Pethia* (Teleostei: Cyprinidae) from the Brahmaputra Drainage, India

Niti Sharma¹ · Waikhem Vishwanath² · Mayanglambam Dileep² · Simanta Behera³ · R. K. Das⁴

Received: 7 April 2024 / Revised: 13 December 2024 / Accepted: 3 June 2025
© The Author(s), under exclusive license to The National Academy of Sciences, India 2025

Abstract *Pethia dibrugensis*, a new species of cyprinid from the Brahmaputra River, Dibrugarh, Assam, India, is described here. The new species is distinguished from its congeners based on the combination of following characters: an incomplete lateral line; a black blotch with more or less distinct extension to dorsal and ventral sides of caudal peduncle; 10 circumdorsal scales; 9/4 scales between dorsal-fin and lateral line; and 4/3 between lateral line and pelvic-fin origin; absence of humeral mark and barbels.

Keywords New cyprinid · Cypriniformes · Assam

The genus *Pethia*, one of the five lineages of the original genus *Puntius* which are recognized as valid genera [1, 2], is characterized by having small adult size (usually less than 50 mm SL, exceptionally to 80 mm SL); rostral barbels absent; maxillary barbels usually absent, minute if present; last unbranched dorsal-fin ray stiff, serrated; lateral line complete, interrupted or incomplete (usually incomplete), with 19–24 scales on body in lateral series; antitriose pre-dorsal spinous ray and postepiphyseal fortiscale absent; five uniserial scales; infraorbital 3 deep, partially overlapping the cheek and preoperculum; a black blotch on caudal peduncle; and frequently other black blotches, spots or bars

on side of body [1]. The genus is restricted to South Asia [1, 3–6] and comprises of 39 valid species [7].

During a freshwater faunal survey of the Brahmaputra River at Majan village near Dibrugarh, Assam (Fig. 1), some specimens of *Pethia* were collected. We herein describe *Pethia dibrugensis*, as a new species based on comparison with its congeners.

Specimens collected were preserved in 10% formalin and then subsequently preserved in 70% alcohol. Methods of measurements and counts follow Kallander (2008) [8], except pre-anal scales are counted along the ventral midline from the posterior end of the head to the origin of the anal fin, but excluding the 1–2 successively smaller scales between the pelvic fin. Measurements were made point to point with digital calipers to the nearest 0.1 mm. Measurements of the body parts were expressed as proportions of standard length (SL). The value in parentheses after a specific count indicates the frequency of the count. Fin rays and scales were counted under a stereo-zoom light microscope. The examined materials were deposited both in the National Fish Museum and Repository of ICAR—National Bureau of Fish Genetic Resources (NBFGR), Lucknow (holotype and paratypes) and in the Manipal University Museum of Fishes (MUMF) (paratypes).

Type material. Holotype: CYPDDB/NBFGR, 35.9 mm SL, India: Assam: Dibrugarh District: Brahmaputra River at Majan village, 27°32'35" N, 95°08'29" E; 107 mm; Niti Sharma and team, 14 July 2021.

Paratypes: CYPDDB/19NBFGR, CYPDDB/25NBFGR, CYPDDB/3NBFGR and MUMF/ N/102–N/107, 9, 28.5–38.6 mm SL, same data as holotype.

Diagnosis: *Pethia dibrugensis* (Fig. 2) is distinguished from its congeners by the combination of the following characters: an incomplete lateral line with 8 pored scales; 24–26

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सिफरी), क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी, आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर और मणिपुर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की एक टीम द्वारा ब्रह्मपुत्र नदी के मीठे जल के जीव सर्वेक्षण के दौरान, असम के डिब्रूगढ़ में ब्रह्मपुत्र नदी से साइप्रिनिड मछली की एक नई प्रजाति की खोज की गई है। इस नई प्रजाति का नाम इसके प्रकार स्थान 'डिब्रूगढ़' के नाम पर पेथिया डिब्रूगढ़ेंसिस रखा गया है।

पेथिया डिब्रूगढ़ेंसिस एक काँटेदार मछली है, जो साइप्रिनिडे परिवार से संबंधित है और इसकी खोज ने पूर्वोत्तर भारत में ब्रह्मपुत्र बेसिन की बढ़ती इचिथियोफॉनल विविधता की सूची में एक नया नाम जोड़ दिया है।

नई प्रजाति को निम्नलिखित लक्षणों के संयोजन के आधार पर इसके समजातीय प्रजातियों से अलग किया जाता है: एक अपूर्ण पार्श्व रेखा; दुम के डंठल के पृष्ठीय और अधर पक्षों तक कमोवेश स्पष्ट विस्तार वाला एक काला धब्बा; ह्यूमरल चिह्न और बारबेल का अभाव।

पेथिया डिब्रूगढ़ेंसिस वर्तमान में ब्रह्मपुत्र नदी, मैजान गाँव, डिब्रूगढ़ जिला, असम, भारत में पाई जाती है। यह मछली प्रजाति मध्यम गति से बहते पानी में पाई जाती है जिसका तल रेत और पत्थरों के साथ कीचड़ से बना होता है। पेथिया डिब्रूगढ़ेंसिस के साथ पाई जाने वाली अन्य प्रजातियों में छोटी देशी मछलियाँ शामिल हैं।

ये निष्कर्ष सिंगर नेचर द्वारा एक समकक्ष-समीक्षित अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका, नेशनल एकेडमी साइंस लेटर्स में प्रकाशित किए गए थे।

इस मछली की खोज आईसीएआर-सिफरी के निदेशक डॉ. बसंत कुमार दास और आईसीएआर-सिफरी के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी के वैज्ञानिक डॉ. सिमंकू बोरा, और वैज्ञानिक डॉ. नीति शर्मा ने प्रसिद्ध मीठे पानी के वर्गीकरण विज्ञानी प्रो. डब्ल्यू. विश्वनाथ और मणिपुर के पेथिया विशेषज्ञ डॉ. एम. दिश्मा के सहयोग से की।

बढ़ती प्रदूषण के कारण सिलीगुड़ी के जनता नगर खंड में प्रवाहित महानंदा नदी खतरे में

महानंदा नदी, गंगा नदी की एक महत्वपूर्ण सहायक नदी है जो सिलीगुड़ी शहर के लिए एक महत्वपूर्ण जल स्रोत के रूप में कार्य करती है। अपने पारिस्थितिक और सामाजिक-आर्थिक महत्व के बावजूद, नदी शहरीकरण, औद्योगिक अपशिष्ट, अस्पतालों से निकलने वाले चिकित्सा अपशिष्ट और अनुपचारित घरेलू सीवेज के कारण बढ़ते प्रदूषण दबाव का सामना कर रही है, खासकर सिलीगुड़ी जैसे घनी आबादी वाले इलाकों में।



आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा हाल ही में किए गए प्रदूषण आकलन ने महानंदा नदी, खासकर सिलीगुड़ी के जनता नगर क्षेत्र के लगभग 2.1 किलोमीटर खंड गंभीर पर्यावरणीय चिंताओं का कारण है। रिपोर्ट में नदी में अनुपचारित औद्योगिक अपशिष्टों, मिठाई की दुकानों से निकलने वाले अपशिष्ट और घरेलू सीवेज के अनियंत्रित निर्वहन पर प्रकाश डाला गया है, जो जलीय जीवन और जन स्वास्थ्य दोनों के लिए खतरा पैदा करता है। प्रभावित खंड में किए गए जल गुणवत्ता परीक्षण के अनुसार, जैव रासायनिक ऑक्सीजन मांग (बीओडी) का स्तर 2.4 मिलीग्राम/लीटर है, जो उच्च स्तर के

कार्बनिक प्रदूषण का संकेत देता है। इससे भी अधिक चिंताजनक बात यह है कि कुल कोलीफॉर्म की संख्या 280 एमपीएन तक पहुंच गई है, जो सुरक्षित जल उपयोग के लिए स्वीकार्य सीमा से अधिक है और मल पदार्थ और सीवेज से महत्वपूर्ण जीवाणु संदूषण का संकेत देती है।

क्षेत्र के निवासियों ने नदी की बिगड़ती स्थिति के बारे में बढ़ती चिंताओं को व्यक्त किया है, जो स्पष्ट रूप से मटमैली हो गई है और एक दुर्गंध छोड़ती है। जैसा कि निवासियों ने कहा कि पहले वे इस नदी के पानी का उपयोग घरेलू उद्देश्यों के लिए करते थे लेकिन अब इस पानी का इस्तेमाल उनके स्वास्थ्य के लिए भी एक गंभीर चिंता का विषय बन गई है। पर्यावरण कार्यकर्ता और विशेषज्ञ प्रदूषण के लिए मुख्य रूप से छोटे पैमाने के कारखानों से अनियंत्रित निर्वहन और उचित सीवेज उपचार सुविधाओं की कमी को जिम्मेदार ठहराते हैं। यह स्थिति शहरी उपेक्षा का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। जब तक अपशिष्ट निर्वहन को विनियमित करने और विकेंद्रीकृत सीवेज उपचार प्रणालियों को स्थापित करने के लिए तत्काल कदम नहीं उठाए जाते, महानंदा नदी की पारिस्थितिक तंत्र और बिगड़ती जाएगी। नदी के स्वास्थ्य को बहाल रखने के लिए विकेंद्रीकृत सीवेज उपचार संयंत्रों की स्थापना, उद्योगों से निकलने वाले अपशिष्ट को विनियमित करने और नियमित जल निगरानी जैसे तत्काल उपायों की सिफारिश की जाती है।



आईसीएआर-सिफरी ने पुलिकट झील की पारिस्थितिकी और मत्स्य पालन की स्थिरता का आकलन किया

कोरोमंडल तट पर स्थित पुलिकट झील, देश की दूसरी सबसे बड़ी खारे पानी की झील है। पुलिकट झील का मत्स्य पालन स्थानीय मछुआरा समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण आर्थिक संसाधन है, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था और समुद्री खाद्य प्रसंस्करण एवं विपणन जैसे संबंधित क्षेत्रों को भी

मजबूत करता है।

आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर की एक वैज्ञानिक टीम ने 12-17 जून 2025 के दौरान पुलिकट झील का गहन अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य संस्थान की चल रही परियोजना "पुलिकट झील के जलवायु परिवर्तन परिदृश्य के संबंध में मत्स्य विविधता, पर्यावरण और मत्स्य प्रजातियों के भंडार में बदलाव का आकलन" के एक हिस्से के रूप में मत्स्य विविधता, मछली की पकड़ की संरचना, आवास विशेषताओं और पारिस्थितिक स्वास्थ्य का आकलन करना था। इस टीम

में डॉ. एस.के. दास, डॉ. डी. भक्त, डॉ. कैन्सियल जॉनसन और हंसराज कुमार ने आईसीएआर-सिफरी के आरईएफ प्रभाग के प्रमुख डॉ. एस.के. मन्ना के पर्यवेक्षण और निदेशक डॉ. बसंत कुमार दास के मार्गदर्शन में यह कार्य किया।

यह सर्वेक्षण 15 अप्रैल से 14 जून तक लागू 61-दिवसीय वार्षिक मछली पकड़ने के प्रतिबंध के अंत के साथ ही शुरू हुआ, जिसका उद्देश्य प्रजनन के मौसम के दौरान मछली आबादी की सुरक्षा करना है, और जिससे मछली की संख्या में वृद्धि होती है। पारिस्थितिकी और मत्स्य पालन के अध्ययन के अलावा, टीम ने मछुआरों की भागीदारी, नावों, जालों और जालों का उपयोग करने वाली उनकी पारंपरिक मछली पकड़ने की विधियों का भी उल्लेख किया, जो लैगून के अक्सर अशांत पानी के अनुकूल थे। औद्योगिक अपशिष्ट, कृषि अपवाह और घरेलू अपशिष्ट झील के प्रदूषण में योगदान करते हैं, जिससे पानी की गुणवत्ता और मछली के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के मत्स्य विभाग के अधिकारी, जो स्थायी मत्स्य पालन पद्धतियों, मत्स्य पालन गतिविधियों के नियमन और झील के आवश्यक पारिस्थितिक तंत्रों के संरक्षण हेतु कार्यरत हैं, उन्होंने सिफरी के शोध दल का सक्रिय रूप से समर्थन किया। पुलिकट झील का मत्स्य पालन स्थानीय सामाजिक और आर्थिक ढाँचे का अभिन्न अंग है और इस महत्वपूर्ण संसाधन की दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए समुदाय की आवश्यकताओं को पर्यावरण संरक्षण के सिद्धांतों के साथ संरेखित करना अत्यंत आवश्यक है। अध्ययन में प्राप्त आँकड़े झील की मत्स्य पालन संबंधी जानकारी को सुदृढ़ करेंगे और इस महत्वपूर्ण खारे जल पारिस्थितिकी तंत्र के मत्स्य पालन के स्थायी प्रबंधन और संरक्षण में सहायक होंगे।



आईसीएआर-सिफरी ने त्रिपुरा के डंबूर जलाशय में पाब्दा (ओमपोक बिमाकुलैटस) के पिंजरे में पालन की शुरुआत की
आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सिफरी), बैरकपुर ने, त्रिपुरा सरकार के मत्स्य विभाग के सहयोग से,



त्रिपुरा के धलाई जिले में स्थित डंबूर जलाशय में उच्च-मूल्य वाली बटर कैटफिश, ओमपोक बिमाकुलैटस (पाब्दा) के पिंजरे में पालन की शुरुआत की। एनएफडीबी द्वारा प्रायोजित इस परियोजना का उद्देश्य इस व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण मछली प्रजाति के पिंजरे में पालन को बढ़ावा देना है ताकि लाभप्रदता बढ़ाई जा सके और अन्तर्स्थलीय खुले जल प्रणाली में इसे अपनाने को बढ़ावा दिया जा सके। आईसीएआर-सिफरी द्वारा विकसित इस पिंजरे में पालन तकनीक को राज्य और केंद्रीय एजेंसियों द्वारा बढ़ावा मिल रहा है, जिसमें त्रिपुरा के डंबूर जलाशय सहित कई आर्द्रभूमि और जलाशयों में स्थापना और प्रदर्शन शामिल हैं। इस जलाशय में कुल 1512 पिंजरे लगाए गए।

वर्तमान इस तकनीक की शुरुआत आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर के माननीय निदेशक डॉ. बि.के. दास, के नेतृत्व में त्रिपुरा के धलाई जिले के डंबूर जलाशय में गंदाचेर्चा उप-मंडल के रायश्याबारी ब्लॉक के एडीसी गांव, पश्चिम पोटाचारी में की गई। 20 जून 2025 को पिंजरों (6 मीटर x 4 मीटर x 4 मीटर) में कुल 10,000 पाब्दा बीज (औसत लंबाई 5.45 सेमी; औसत वजन: 0.55 ग्राम) रखे गए। इसके अतिरिक्त,





आईसीएआर-सिफरी ने पिंजरों के मछलियों के लिए 3 टन फ्लोटिंग पेलेट फीड की आपूर्ति की है। मछुआरों को इस पिंजरे में मछली पालन तकनीक से अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए और वैज्ञानिक रूप से तकनीक को आगे बढ़ाने के लिए स्थानीय मछुआरों और राज्य विभाग के अधिकारियों के साथ एक जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किया गया था। सुलीप माझी, प्रमुख, आईसीएआर-सिफरी क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी; डॉ. पी.के. परिदा, वरिष्ठ वैज्ञानिक; और डॉ. जी. कर्नाटक, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रधान अन्वेषक, ने कार्यक्रम को सफल बनाने में मदद की। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. एस.सी.एस. दास, वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईसीएआर-सिफरी क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी, और श्री एम.एच. रामटेके, वैज्ञानिक, आईसीएआर-सिफरी बैरकपुर द्वारा किया गया, जिसमें श्री मदन त्रिपुरा, मत्स्य विभाग, गंदाचेरा, त्रिपुरा से सहयोग प्राप्त हुआ। आईसीएआर-सिफरी इस क्षेत्र के खुले जल क्षेत्रों में इस तकनीक को सफलतापूर्वक अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु इस दिशा में कार्य कर रहा है।



AgroSpectrum **AgriSpectrum** **From Agriculture to Agribusiness** **The AI Advantage**

CIFRI engages over 78,000 farmers in West Bengal under Viksit Kishi Sankalp Abhiyan

in a major push toward promoting sustainable and modern agricultural practices, the Central Island Fisheries Research Institute (CIFRI-CIFRI) has connected with more than 78,000 farmers across 12 districts in West Bengal under the Viksit Kishi Sankalp Abhiyan, a 79-day nationwide campaign launched on May 28, 2025. Aligned with the national vision of Viksit Kishi Sankalp (VKS), the...

हिमालय दर्पण

केन्द्र सरकारको आयोजनामा सर्व-भारत देशमा

विकसित कृषि संकल्प अभियान-२०२५

अभियानमा केन्द्रीय कृषि मन्त्री, सिफरी रिलीज नोटिस, यहाँ सम्मको आसानी सम्पादनमा यहाँको कृषि क्षेत्रलाई सबै माधुनिक बनाउने कुरामा जोड दिए। यहाँको सबै कृषकहरू यस अभियानमा सम्मिलित भए।

वैज्ञानिकहरूको टोलीले क्षेत्रमा आधुनिक प्रविधिको उपयोग गर्दै, 'सफा र स्वस्थ' अभियानलाई अगाडि बढाउँदै, देशमा बलियो र निर्यात कृषि उत्पादन गर्ने आधुनिक कृषि क्षेत्रको विकासको लागि ७३-दिने अभियानलाई सम्पन्न गरे।

यहाँको सबै कृषकहरूले यहाँको कृषि क्षेत्रलाई सबै माधुनिक बनाउने कुरामा जोड दिए। यहाँको सबै कृषकहरू यस अभियानमा सम्मिलित भए।



Reviving Rivers, Empowering Communities: ICAR-CIFRI's Sundarbans Initiative under NMCG

ICAR-CIFRI, in collaboration with the National Mission for Clean Ganga (NMCG), recently carried out a pre-monsoon ecological assessment of the Hariharbanga River in Kanuramari Village in Sundarbans delta region. The Sundarbans, a UNESCO World Heritage site, is known for its rich biodiversity and environmental significance. The ICAR-CIFRI-NMCG team's fieldwork involved the systematic collection of seasonal data on water quality, soil parameters, and fish biodiversity. These assessments are part of an ongoing ecological monitoring...

आनन्दबाजार पत्रिका

नदीयार कुमलि बिल थেকে अभियान शुरू करलो आई सि ए आर-सिफरी

मध्या चाबेर बहनुथी प्रयुक्ति तुले देओयार जना नदीयार चाकमहेर कुमलि बिले विकसित कृषि सकेल्ल अभियान शुरू करल सिफरी। अनुष्ठाने हाजिर छिलेन २०२ जन स्थानीय किसान फार्मास। तादेर ५० शताब्द महिला मध्याजीवी। २९ मे उद्घोषणी अनुष्ठाने उपस्थित छिलेन सङ्घार जहैरेक्टर ड. वि के दास, सङ्घार मध्या विज्ञानी ड. अपर्णा राय। उद्घोषणी अनुष्ठाने मध्या चाब एवं कृषि नानान प्रयुक्ति तुले धरा हय। एक्ई सङ्घे तुले धरा हय कृषकदेर जना चछु हउया सरकारि स्किमउले। सिफरी सङ्घे ज्ञाना याम एई १५ दिनेर अभियाने २०२० जन कृषक ओ मध्याजीवीर काछे पौछेबे सिफरी। सङ्घे थाकबे अहिंसिआर ए अखुर्कृत्त विभिन्न गावेषणा सङ्घा एवं कृषि विज्ञान केन्ट्रेर विज्ञानी एवं विषयबस्तु विशेषज्ञरा। सायेंस्टि टिम याबे वीरभूम, पूर्व बर्धमान, उन्तुर दिनाजपुर, मुर्शिदाबाद, दक्षिण २४ परगना, लुगलि, दार्जिलिङ, ब्याङ्गग्राम, पश्चिम मेदिनीपुरेर मठ जेलाउलोते। एथांने प्रयुक्ति येमन कृषकरा पाबेन, ठिक तेमनि नानान समस्या कृषकदेर मुख थेके बेरिये आसबे। या निजे आगामी गावेषणा, परिकल्पना एगोबे। तबे विभिन्न ज्ञायगाय कृषकरा कृषि, मध्या एवं प्राणी पालन करते गेले ये समस्त समस्याउलि तादेर कुरे कुरे खांय एई समस्त समस्याउलि दापटेर सङ्घे तुले धरेन।

THE KANGRA CHRONICLE

Reviving Rivers, Empowering Communities: ICAR-CIFRI's Sundarbans Initiative under NMCG

ICAR-CIFRI, in collaboration with the National Mission for Clean Ganga (NMCG), recently carried out a pre-monsoon ecological assessment of the Hariharbanga River in Kanuramari Village in Sundarbans delta region. The Sundarbans, a UNESCO World Heritage site, is known for its rich biodiversity and environmental significance. The ICAR-CIFRI-NMCG team's fieldwork involved the systematic collection of seasonal data on water quality, soil parameters, and fish biodiversity. These assessments are part of an ongoing ecological monitoring...

इंडियन पंच

विकसित कृषि संकल्प अभियान-2025 के तहत सुंदरबन में मत्स्य कृषि के कुशलता से निपटने के लिए मछुआरों और वैज्ञानिकों के साथ सह

सुंदरबन के जल स्रोतों के विकास के लिए एक अभियान शुरू किया गया है। इस अभियान का उद्देश्य है कि सुंदरबन क्षेत्र में मछुआरों को आधुनिक तकनीकें प्रदान करके उनकी आय को बढ़ावा देना। इस अभियान में 79 दिनों का राष्ट्रीय अभियान शामिल है, जिसमें 78,000 किसानों को शामिल किया गया है।

सुंदरबन के कुलतलि, जय गोपालपुर, नरहरगंज, गंगासागरे विकसित कृषि संकल्प अभियान

सुंदरबन के जल स्रोतों के विकास के लिए एक अभियान शुरू किया गया है। इस अभियान का उद्देश्य है कि सुंदरबन क्षेत्र में मछुआरों को आधुनिक तकनीकें प्रदान करके उनकी आय को बढ़ावा देना। इस अभियान में 79 दिनों का राष्ट्रीय अभियान शामिल है, जिसमें 78,000 किसानों को शामिल किया गया है।

आ

सुंदरबन के जल स्रोतों के विकास के लिए एक अभियान शुरू किया गया है। इस अभियान का उद्देश्य है कि सुंदरबन क्षेत्र में मछुआरों को आधुनिक तकनीकें प्रदान करके उनकी आय को बढ़ावा देना। इस अभियान में 79 दिनों का राष्ट्रीय अभियान शामिल है, जिसमें 78,000 किसानों को शामिल किया गया है।

सुंदरबन के कुलतलि, जय गोपालपुर, नरहरगंज, गंगासागरे विकसित कृषि संकल्प अभियान

सुंदरबन के जल स्रोतों के विकास के लिए एक अभियान शुरू किया गया है। इस अभियान का उद्देश्य है कि सुंदरबन क्षेत्र में मछुआरों को आधुनिक तकनीकें प्रदान करके उनकी आय को बढ़ावा देना। इस अभियान में 79 दिनों का राष्ट्रीय अभियान शामिल है, जिसमें 78,000 किसानों को शामिल किया गया है।

नदीयार कुमलि बिल थেকে अभियान शुरू करलो आई सि ए आर-सिफरी

मध्या चाबेर बहनुथी प्रयुक्ति तुले देओयार जना नदीयार चाकमहेर कुमलि बिले विकसित कृषि सकेल्ल अभियान शुरू करल सिफरी। अनुष्ठाने हाजिर छिलेन २०२ जन स्थानीय किसान फार्मास। तादेर ५० शताब्द महिला मध्याजीवी। २९ मे उद्घोषणी अनुष्ठाने उपस्थित छिलेन सङ्घार जहैरेक्टर ड. वि के दास, सङ्घार मध्या विज्ञानी ड. अपर्णा राय। उद्घोषणी अनुष्ठाने मध्या चाब एवं कृषि नानान प्रयुक्ति तुले धरा हय। एक्ई सङ्घे तुले धरा हय कृषकदेर जना चछु हउया सरकारि स्किमउले। सिफरी सङ्घे ज्ञाना याम एई १५ दिनेर अभियाने २०२० जन कृषक ओ मध्याजीवीर काछे पौछेबे सिफरी। सङ्घे थाकबे अहिंसिआर ए अखुर्कृत्त विभिन्न गावेषणा सङ्घा एवं कृषि विज्ञान केन्ट्रेर विज्ञानी एवं विषयबस्तु विशेषज्ञरा। सायेंस्टि टिम याबे वीरभूम, पूर्व बर्धमान, उन्तुर दिनाजपुर, मुर्शिदाबाद, दक्षिण २४ परगना, लुगलि, दार्जिलिङ, ब्याङ्गग्राम, पश्चिम मेदिनीपुरेर मठ जेलाउलोते। एथांने प्रयुक्ति येमन कृषकरा पाबेन, ठिक तेमनि नानान समस्या कृषकदेर मुख थेके बेरिये आसबे। या निजे आगामी गावेषणा, परिकल्पना एगोबे। तबे विभिन्न ज्ञायगाय कृषकरा कृषि, मध्या एवं प्राणी पालन करते गेले ये समस्त समस्याउलि तादेर कुरे कुरे खांय एई समस्त समस्याउलि दापटेर सङ्घे तुले धरेन।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मोर्य, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फक्स: +91-33-25920388; ई-मेल: director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट: www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मासिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुनः उत्पन्न नहीं की जा सकती है